॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

॥ अथर्ववेद संहिता ॥

॥ अथर्ववेद॥

॥ अथ षोडशं काण्डम्॥

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषय सूची

सूक्त १ – दुःखमोचन सूक्त 4
सूक्त २ – दुःखमोचन सूक्त 8
सूक्त ३- दुःखमोचन सूक्त 10
सूक्त ४- दुःखमोचन सूक्त 12
सूक्त ५ – दुःखमोचन सूक्त 15
सूक्त ६ – दुःखमोचन सूक्त 18
सूक्त ७ – दुःखमोचन सूक्त 21
सूक्त ८ – दुःखमोचन सूक्त 25
सूक्त ९- दुःखमोचन सूक्त 45

॥अथर्ववेद – षोडशं काण्डम्॥

सूक्त १ – दुःखमोचन सूक्त

जल की स्तुति और वर्णन, जल के श्रेष्ठ भाग को सागर की ओर प्रेरित करना

अतिसृष्टो अपां वृषभोऽतिसृष्टा अग्नयो दिव्याः ॥१६,१.१॥

वृषभ (बलशाली अथवा वर्षणशील) अप् (मूल सक्रिय द्रव्य) विमुक्त होकर प्रकट हुआ, (उसी से) दिव्य अग्निदेव भी प्रकट हुए ॥१६,२.१॥

रुजन् परिरुजन् मृणन् प्रमृणन् ॥१६,१.२॥

म्रोको मनोहा खनो निर्दाह आत्मदूषिस्तनूदूषिः ॥१६,१.३॥

इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि ॥१६,१.४॥

तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ॥१६,१.५॥

(इन ब्रह्म द्वारा अतिसृष्ट तत्त्वों में से) तोड़ने-फोड़ने वाले, नष्ट-भ्रष्ट करने वाले, घातक खोदने वाले, दाह उत्पन्न करने वाले, दाह उत्पन्न करने वाले मन का भजन करने वाले, आत्म दूषण उत्पन्न करने वाले, काया को दूषित करने वाले, इन सबको हम त्यागते हैं और उन्हें कभी प्राप्त न करें। जिनसे हमें द्वेष है एवं जिन्हें हमसे द्वेष है, उन्हीं के माध्यम से हम उन (घातक पदार्थों) को त्यागते हैं ॥१६,२.२-१६,२.५॥

अपामग्रमसि समुद्रं वोऽभ्यवसृजामि ॥१६,१.६॥

हे जल के भीतर के उत्तम अंश ! हम आपको समुद्र की ओर विसर्जित करते हैं ॥१६,२.६॥

योऽप्स्वग्निरति तं सृजामि म्रोकं खनिं तनूदूषिम् ॥१६,१.७॥

जल के मध्य घातक, खादक और शरीर को दोषयुक्त करने वाले अग्नि को हम दोष मुक्त करते हैं ॥१६,२.७॥

यो व आपोऽग्निराविवेश स एष यद्वो घोरं तदेतत्॥१६,१.८॥

हे जल ! आपमें जिस अग्नि तत्त्व ने प्रवेश लिया है, उनमें आपके लिए भयंकर अंश यह है ॥१६,२.८॥

इन्द्रस्य व इन्द्रियेणाभि षिञ्चेत्॥१६,१.९॥

आपके परम वैभवयुक्त अंशों का इन्द्रिय शक्ति से अभिषेक करना चाहिए ॥१६,२.९॥

अरिप्रा आपो अप रिप्रमस्मत्॥१६,१.१०॥

विकार रहित जल हमसे सभी प्रकार के पाप- विकारों को दूर हटाए ॥१६,२.१०॥

प्रास्मदेनो वहन्तु प्र दुष्वप्न्यं वहन्तु ॥१६,१.११॥

यह जल हमारे पाप- विकारों को प्रवाहित करके दूर ले जाए और दुःस्वप्नों के प्रभाव को भी दूर करे ॥१६,२.११॥

शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोप स्पृशत त्वचं मे ॥१६,१.१२॥

हे जल !आप हमें अनुग्रह- दृष्टि से देखें और अपने कल्याणकारक अंगों से हमारी त्वचा का स्पर्श करें ॥१६,२.१२॥

शिवान् अग्नीन् अप्सुषदो हवामहे मयि क्षत्रं वर्च आ धत्त देवीः ॥१६,१.१३॥

जल में संव्याप्त मंगलकारी अग्नियों को हम आमन्त्रित करते हैं, यह दिव्य जल हमारे अन्दर क्षात्रबल (पराक्रमशक्ति) और तेजस्विता प्रतिष्ठित करे ॥१६,२.१३॥

॥अथर्ववेद – षोडशं काण्डम्॥

सूक्त २ – दुःखमोचन सूक्त

प्रजापति से प्रार्थना

निर्दुरर्मण्य ऊर्जा मधुमती वाक्॥१६,२.१॥

हम विकारजनित नेत्र रोग (अर्म) से सर्वथा मुक्त रहें, हमारी वाणी मधुर और ओजस्वी हो ॥१६,२.१॥

मधुमती स्थ मधुमतीं वाचमुदेयम् ॥१६,२.२॥

(हे ओषधियो !) आप मधुरता सम्पन्न हैं, अतएव हम भी मधुर वाणी का प्रयोग करें ॥१६,२.२॥

उपहूतो मे गोपाः उपहूतो गोपीथः ॥१६,२.३॥

हम इन्द्रियों के पालनकर्ता मन को बुलाते हैं और (सोमपान करने वाले मुख को बुलाते हैं ॥१६,२.३॥

सुश्रुतौ कर्णौ भद्रश्रुतौ कर्णौ भद्रं श्लोकं श्रूयासम् ॥१६,२.४॥

हमारे दोनों कान श्रेष्ठ ज्ञान, कल्याणकारी वचन और हितकारी वार्तालाप का ही श्रवण करें ॥१६,२.४॥

सुश्रुतिश्च मोपश्रुतिश्च मा हासिष्टां सौपर्णं चक्षुरजस्रं ज्योतिः ॥१६,२.५॥

श्रेष्ठ श्रवणशक्ति और दूर से सुनने की क्षमता मेरा परित्याग कदापि न करे । हम सदैव गरुड़ के नेत्र के समान तेजस्वी दृष्टि से युक्त रहें ॥१६,२.५॥

ऋषीणां प्रस्तरोऽसि नमोऽस्तु दैवाय प्रस्तराय ॥१६,२.६॥

आप अषयों के पाषाण हैं, देवरूप आप (पाषाण) को हमारा नमन है ॥१६,२.६॥

॥अथर्ववेद – षोडशं काण्डम्॥

सूक्त ३- दुःखमोचन सूक्त

आदित्य का वर्णन

मूर्धाहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम् ॥१६,३.१॥

धन- सम्पदा की दृष्टि से हम मूर्धन्य बनें और समान स्पर्धी लोगों के अग्रणी बनें ॥१६,३.१॥

रुजश्च मा वेनश्च मा हासिष्टां मूर्धा च मा विधर्मा च मा हासिष्टाम् ॥१६,३.२॥

तेजस्विता और कान्ति हमारा परित्याग न करे । मूर्धा (विचार) और धर्म भी हमारा परित्याग न करे ॥१६,३.२॥

उर्वश्च मा चमसश्च मा हासिष्टां धर्ता च मा धरुणश्च मा हासिष्टाम् ॥१६,३.३॥

आचमन पात्र, चमसपात्र, धारक और आश्रय देने वाले भी कभी हमें परित्यक्त न करें ॥१६,३.३॥

विमोकश्च मार्द्रपविश्च मा हासिष्टामार्द्रदानुश्च मा मातरिश्वा च मा हासिष्टाम् ॥१६,३.४॥

मुक्तिप्रद और आर्द्रशस्त्र हमें न छोड़ें आर्द्रता देने वाला जल और मातरिश्वा(प्राण) हमें छोड़कर न जाएँ ॥१६,३.४॥

बृहस्पतिर्म आत्मा नृमणा नाम हृद्यः ॥१६,३.५॥

प्रसन्नता देने वाले, अनुकम्पा प्रदायक तथा मन को एकाग्र करने वाले बृहस्पतिदेव हमारी अन्तरात्मा हैं ॥१६,३.५॥

असंतापं मे हृदयमुर्वी गव्यूतिः समुद्रो अस्मि विधर्मणा ॥१६,३.६॥

हमारे हृदय सन्तापरहित हों, विशाल गौ (पृथ्वी) हो ।धारण क्षमता के द्वारा हम समुद्र के समान हों ॥१६,३.६॥

॥अथर्ववेद – षोडशं काण्डम्॥

सूक्त ४- दुःखमोचन सूक्त

आदित्य का वर्णन

नाभिरहं रयीणां नाभिः समानानां भूयासम् ॥१६,४.१॥

हम वैभव, सम्पदा और समान जातीय बन्धुओं दोनों के नाभि (केन्द्र) बनकर रहें ॥१६,४.१॥

स्वासदसि सूषा अमृतो मर्त्येश्वा ॥१६,४.२॥

मरणधर्मा मनुष्यों में तेजस्वी उषा अमरत्व प्रदान करने वाली और उत्तम रीति से विराजमान होने वाली हो ॥१६,४.२॥

मा मां प्राणो हासीन् मो अपानोऽवहाय परा गात्॥१६,४.३॥

जीवनतत्त्व, प्राण और अपान कभी भी हमें छोड़कर दूर न जाएँ ॥१६,४.३॥

सूर्यो माह्नः पात्वग्निः पृथिव्या वायुरन्तरिक्षाद्यमो मनुष्येभ्यः सरस्वती पार्थिवेभ्यः ॥१६,४.४॥

सूर्यदेव दिन से, अग्निदेव पृथ्वी से, वायुदेव अन्तरिक्ष से, यमदेव मनुष्यों से तथा देवी सरस्वती पृथ्वी से उत्पन्न हुए पदार्थों से हम सभी की सुरक्षा करें ॥१६,४.४॥

प्राणापनौ मा मा हासिष्टं मा जने प्र मेषि ॥१६,४.५॥

जीवनतत्त्व प्राण और अपान हमारा परित्याग न करें, हमारा अस्तित्व बना रहे ॥१६,४.५॥

स्वस्त्यद्योषसो दोषसश्च सर्व आपः सर्वगणो अशीय ॥१६,४.६॥

आज (की प्रभातवेला) और रात्रि हमारे लिए कल्याणप्रद हो । हम सभी प्रकार के जल-समूह और सभी गणों से सम्पन्न होकर सुख का उपभोग करें ॥१६,४.६॥

शक्करी स्थ पशवो मोप स्थेषुर्मित्रावरुणौ मे प्राणापानावग्निर्मे दक्षं दधातु ॥१६,४.७॥

हे पशुओ ! आप सामर्थ्यवान् हों, हमारे समीप उपस्थित रहें । मित्र और वरुणदेव हमारे प्राण-अपान तत्त्व को परिपुष्ट करें तथा अग्निदेव हमारी सामर्थ्य को सुदृढ़ करें ॥१६,४.७॥

॥अथर्ववेद – षोडशं काण्डम्॥

सूक्त ५ – दुःखमोचन सूक्त

स्वप्न की उत्पत्ति, स्वप्न मृत्यु है, स्वप्न निर्धनता का पुत्र

विद्म ते स्वप्न जनित्रं ग्राह्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ।
अन्तकोऽसि मृत्युरसि ।
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात्पाहि ॥१६,५.१॥

हे स्वप्न !हम तुम्हारी उत्पत्ति के ज्ञाता हैं, तुम ग्राह्यपिशाची (व्याधि) के पुत्र हो और यमदेव के उपकरण हो ॥ तुम अन्त करने वाले और मत्युरूप हो ॥ हे स्वप्न ! हम तुम्हारे उस स्वरूप के ज्ञाता हैं, अतएव दुः स्वप्नों से तुम हमें बचाओ ॥१६,५.१॥

विद्म ते स्वप्न जनित्रं निर्ऋत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ।
॥१६,५.२ ॥

हे स्वप्न ! हम तुम्हारी उत्पत्ति के ज्ञाता हैं । तुम पाप देवी (निति) के पुत्र और यमदेव के साधनभूत हो ॥१६,५.२॥

विद्म ते स्वप्न जनित्रमभूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य ॥१६,५.३॥

हे स्वप्न ! हम तुम्हारी उत्पत्ति को भली प्रकार जानते हैं। तुम अभूति के पुत्र और यमदेव के साधन भूत हो ॥१६,५.३॥

विद्म ते स्वप्न जनित्रं निर्भूत्याः पुत्रोऽसि ॥१६,५. ४॥

हे स्वप्न ! हम तुम्हारे उद्भव के ज्ञाता हैं। तुम निर्भूति (निर्धनता) के पुत्र और मृत्युदेव के साधन हो ॥१६,५.४॥

विद्म ते स्वप्न जनित्रं पराभूत्याः पुत्रोऽसि ॥१६,५. ५ ॥

हे स्वप्न ! हम तुम्हारी उत्पत्ति के ज्ञाता हैं, तुम पराभव के पुत्र और मृत्यु की ओर ले जाने के साधन हो ॥१६,५.५॥

विद्म ते स्वप्न जनित्रं देवजामीनां पुत्रोऽसि यमस्य करणः ।
अन्तकोऽसि मृत्युरसि ।
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात्पाहि ॥१६,५.६॥

हे स्वप्न ! हम तुम्हारे ज्ञाता हैं, तुम इन्द्रिय विकारों के पुत्र और मृत्युदेव की ओर ले जाने के साधन हो ॥ तुम जीवन को अन्त करने वाले और साक्षात् मृत्यु की प्रतिमूर्ति हो ॥ हे स्वप्न ! हम तुम्हारे उस स्वरूप के ज्ञाता हैं । अतएव तुम हमें बुरे स्वप्न के प्रभाव से मुक्त रखो ॥१६,५.६॥

॥अथर्ववेद – षोडशं काण्डम्॥

सूक्त ६ – दुःखमोचन सूक्त

दुःस्वप्न का नाश

अजैष्माद्यासनामद्यामूमनागसो वयम् ॥१६,६.१॥

हम विजय प्राप्त करें, भूमि उपलब्ध करें और पाप- तापों से मुक्त रहें ॥१६,६.१॥

उषो यस्माद्दुष्वप्न्यादभैष्माप तदुछतु ॥१६,६.२॥

है उष:काल ! जिस बुरे स्वप्न से हम भयभीत होते हैं, वह भय विनष्ट हो जाए ॥१६,६.२॥

द्विषते तत्परा वह शपते तत्परा वह ॥१६,६.३॥

(हे देव !) आप इस भय को उनके समीप ले जाएँ, जो हमसे विद्वेष रखते हैं और जो हमारे निन्दक हैं ॥१६,६.३॥

यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तस्मा एनद्गमयामः ॥१६,६.४॥

जो हमारे प्रति द्वेष रखते हैं और हम जिनसे द्वेष रखते हैं, उनकी ओर हम इस भय को प्रेरित करते हैं ॥१६,६.४॥

उषा देवी वाचा संविदाना वाग्देव्युषसा संविदाना ॥१६,६.५॥

देवी उषा वाणी के साथ और वाग्देवी उषा के साथ सम्मति रखती हुई मिलें ॥१६,६.५॥

उषस्पतिर्वाचस्पतिना संविदानो वाचस्पतिना संविदानः ॥१६,६.६॥

उषा के पति वाचस्पति के साथ तथा वाचस्पति उषा के स्वामी के साथ सहमत होते हुए परस्पर मिलें ॥१६,६.६॥

तेऽमुष्मै परा वहन्त्वरायान् दुर्णाम्नः सदान्वाः ॥१६,६.७॥

कुम्भीकाः दूषीकाः पीयकान् ॥१६,६.८॥

वे इस दुष्ट शत्रु के लिए दूषित नाम वाले दुःख और अन्य आपदाओं, कुम्भ के समान बढ़ने वाले उदर रोगों,

शरीरजन्य दूषित रोगों और प्राण घातक रोगों को प्रेरित करें ॥१६,६.७-१६,६.८॥

जाग्रद्दुष्वप्न्यं स्वप्नेदुष्वप्न्यम् ॥१६,६.९॥

अनागमिष्यतो वरान् अवित्तेः संकल्पान् अमुच्या द्रुहः पाशान् ॥१६,६.१०॥

जाग्रत् अवस्था के समय बुरे स्वप्न से मिलने वाले फलों, सुषुप्त अवस्था में बुरे स्वप्न से प्राप्त होने वाले फलों, दरिद्रता के भूतकालीन संकल्पों, न प्राप्त होने वाले श्रेष्ठ पदार्थों और न मुक्त होने योग्य द्रोहजनित पाशों से हम आपको मुक्त करते हैं ॥१६,६.९-१६,६.१०॥

तदमुष्मा अग्ने देवाः परा वहन्तु वघ्रिर्यथासद्विथुरो न साधुः ॥१६,६.११॥

हे अग्निदेव ! उन सभी प्रकार की आपदाओं को शत्रु की ओर सम्पूर्ण देवगण ले जाएँ, जिससे वह शत्रु पौरुषहींन, व्यथायुक्त और सज्जनोचित गरिमा से रहित हो जाए ॥१६,६.११॥

॥अथर्ववेद – षोडशं काण्डम्॥

सूक्त ७ – दुःखमोचन सूक्त

दुःस्वप्न का नाश

तेनैनं विध्याम्यभूत्यैनं विध्यामि निर्भूत्यैनं विध्यामि पराभूत्यैनं विध्यामि ग्राह्यैनं विध्यामि तमसैनं विध्यामि ॥१६,७.१॥

हम इसे अभिचार क्रिया से, अभूति (दुर्गति) से, दारिद्र्य (निर्भूति) से, पराभूति (पराभव से, ग्राह्य (रोग) से और अन्धकार (अज्ञान) से विदीर्ण करते हैं ॥१६,७.१॥

देवानामेनं घोरैः क्रूरैः प्रैषैरभिप्रेष्यामि ॥१६,७.२॥

हम इसे देवशक्तियों के भयानक और क्रूरतापूर्ण निर्देशों के सामने उपस्थित करते हैं ॥१६,७.२॥

वैश्वानरस्यैनं दंष्ट्रयोरपि दधामि ॥१६,७.३॥

हम इसे वैश्वानर अग्नि की दाढ़ों में स्थापित करते हैं ॥१६,७.३॥

एवानेवाव सा गरत्॥१६,७.४॥

वह आपदा इस शत्रु का इस रीति अथवा अन्य रीति से भक्षण करे ॥१६,७.४॥

योऽस्मान् द्वेष्टि तमात्मा द्वेष्टु यं वयं द्विष्मः स आत्मानं द्वेष्टु ॥१६,७.५॥

जो हमसे द्वेष करते हैं, आत्मचेतना उससे द्वेष करे तथा जिसके प्रति हम द्वेषभाव रखते हैं, वह अपनी चेतना के प्रति द्वेष करे ॥१६,७.५॥

निर्द्विषन्तं दिवो निः पृथिव्या निरन्तरिक्षान्द्रजाम ॥१६,७.६॥

हम ईर्ष्या-द्वेष रखने वाले को द्युलोक, पृथ्वी और अन्तरिक्ष से दूर फेंकते हैं ॥१६,७.६॥

सुयामंश्चाक्षुष ॥१६,७.७॥

इदमहमामुष्यायणेऽमुष्याः पुत्रे दुष्वप्न्यं मृजे ॥१६,७.८॥

हे श्रेष्ठ नियामक निरीक्षणकर्ता ! हम बुरे स्वप्नों से प्राप्त होने वाले फल को अमुक गोत्र में उत्पन्न, अमुक के पुत्र में प्रेषित करते हैं ॥१६,७.७-१६,७.८॥

यददोअदो अभ्यगछं यद्दोषा यत्पूर्वां रात्रिम् ॥१६,७.९॥

यज्जाग्रद्यत्सुप्तो यद्दिवा यन् नक्तम् ॥१६,७.१०॥

यदहरहरभिगछामि तस्मादेनमव दये ॥१६,७.११॥

पूर्वरात्रि में जिन अमुक कर्मों को हम प्राप्त कर चुके हैं, जो जाग्रत् स्थिति, सुषुप्त स्थिति, दिन में, रात्रि में अथवा नित्यप्रति हम पापजन्य दोषों को प्राप्त करते हैं, उन दोषों से हम इसे (शत्रु को) विनष्ट करते हैं ॥१६,७.९-१६,७.११॥

तं जहि तेन मन्दस्व तस्य पृष्टीरपि शृणीहि ॥१६,७.१२॥

हे देव ! आप उस शत्रु के साथ चलते हुए उसका संहार करें और उसकी पसलियों को भी भग्न करें ॥१६,७.१२॥

स मा जीवीत्तं प्राणो जहातु ॥१६,७.१३॥

प्राणतत्त्व उसका परित्याग करें, वह जीवित न रहे ॥१६,७.१३॥

॥अथर्ववेद – षोडशं काण्डम्॥

सूक्त ८ – दुःखमोचन सूक्त

बुरे स्वप्न का नाश तथा शत्रु बृहस्पति के बंधन से मुक्त न होने का विषय

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजसस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ॥१६,८.१॥

विजयश्री प्राप्त करके लाये गये और शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करके लाये गये पदार्थ हमारे हैं । सत्य तेजस्विता, सद्ज्ञान, स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान) , यज्ञीय सत्कर्म , गौ आदि दुधारू पशु, प्रजाप सन्तति और शूरवीर हमारे गौरव को बढ़ाएँ ॥ जो अमुक गोत्र में उत्पन्न, अमुक की सन्तान हमारी शत्रु है, उसे इस अपराध कर्म के फलस्वरूप, हम इस लोक से दूर भगाते हैं ॥ वह शत्रु ग्राह्य (रोगों) के बन्धन से मुक्त न हो ॥ हम उसकी तेजस्विता, वर्चस्व, प्राणऊर्जा और आयुष्य को घेरकर उसे औंधे मुँह गिराते हैं ॥१६,८.१॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स निर्ऋत्याः पाशान् मा मोचि ॥१६,८.२॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह पाप देवता के पाश बन्धन से जकड़ा रहे । हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.२॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
सोऽभूत्याः पाशान् मा मोचि ॥१६,८.३॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह दरिद्रता के पाश से मुक्त न हो। हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.३॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स निर्भूत्याः पाशान् मा मोचि ॥१६,८.४॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह दुर्गतिजन्य दुर्दशा (निर्भूति) के पाश से विमुक्त न हो सके। हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व,

प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.४॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स पराभूत्याः पाशान् मा मोचि ॥१६,८.५॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह पराभव (पराभूति) के बन्धन से मुक्त न होने पाए। हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.५॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।

स देवजामीनां पाशान् मा मोचि ॥१६,८.६॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह इन्द्रिय विकारों (देवजामि) के बन्धन से मुक्ति प्राप्त न कर सके। हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.६॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स बृहस्पतेः पाशान् मा मोचि ॥१६,८.७॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस

लोक से दूर भगाते हैं। वह बृहस्पतिदेव के बन्धन से मुक्त न हो सके। हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.७॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स प्रजापतेः पाशान् मा मोचि ॥१६,८.८॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह प्रजापतिदेव के पाश से न छूट पाए। हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.८॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स ऋषीणां पाशान् मा मोचि ॥१६,८.९॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह ऋषियों के पाश से मुक्त न हो सके। हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.९॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स आर्षेयाणां पाशान् मा मोचि ॥१६,८.१०॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह ऋषियों से उत्पन्न (आधेय) बन्धनों से न छूटे । हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.१०॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
सोऽङ्गिरसां पाशान् मा मोचि ॥१६,८.११॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह अङ्गिराओं के बन्धन से विमुक्त न हो। हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को

क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.११॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स आङ्गिरसानां पाशान् मा मोचि ॥१६,८.१२॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह आङ्गिरस के बन्धन से विमुक्त न हो। हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.१२॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।

सोऽथर्वणां पाशान् मा मोचि ॥१६,८.१३॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह अथर्वाओं के पाश से न छूटे। हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.१३॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स आथर्वणानां पाशान् मा मोचि ॥१६,८.१४॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस

लोक से दूर भगाते हैं। वह अथर्वणों के वचन से छूट पाये । हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.१४॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स वनस्पतीणां पाशान् मा मोचि ॥१६,८.१५॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह वनस्पतियों के पाश से छुटकारा न पा सके । हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.१५॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स वानस्पत्यानां पाशान् मा मोचि ॥१६,८.१६॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह वनस्पति से जन्य पाश में जकड़ा रहे । हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.१६॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स ऋतूनां पाशान् मा मोचि ॥१६,८.१७॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह ऋतुओं के पाश से न छूटे । हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.१७॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स आर्तवानां पाशान् मा मोचि ॥१६,८.१८॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह (आर्तव) ऋतुओं में उत्पन्न होने

वाले पदार्थों के बन्धन से जकड़ा रहे । हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.१८॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स मासानां पाशान् मा मोचि ॥१६,८.१९॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह मासों (महीनों) के बन्धन में आबद्ध रहे । हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.१९॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।

तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
सोऽर्धमासानां पाशान् मा मोचि ॥१६,८.२०॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह अर्ध मासों के बन्धन में बँधा रहे । हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.२०॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
सोऽहोरात्रयोः पाशान् मा मोचि ॥१६,८.२१॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ

। अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह दिन और रात्रि के बन्धन में बँधा रहे । हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.२१॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
सोऽह्नोः संयतोः पाशान् मा मोचि ॥१६,८.२२॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह दिन- रात्रि के संपत भागों के पास से बँधा रहे । हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.२२॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स द्यावापृथिव्योः पाशान् मा मोचि ॥२१६,८.३॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह द्युलोक और पृथ्वी के बन्धन से जकड़ा रहे । हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.२३॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स इन्द्राग्न्योः पाशान् मा मोचि ॥१६,८.२४॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह इन्द्र और अग्निदेव के पाशों से जकड़ा रहे । हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.२४॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स मित्रावरुणयोः पाशान् मा मोचि ॥१६,८.२५॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह मित्र और वरुणदेव के बन्धन में बँधा रहे। हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य

को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.२५॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स राज्ञो वरुणस्य पाशान् मा मोचि ॥१६,८.२६॥

विजय प्राप्ति से उपलब्ध पदार्थ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सद्ज्ञान, (बह्म), स्वर्गीय सुख (आत्मज्ञान), यज्ञीय सत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारे गौरव को बढ़ाएँ । अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक की सन्तान को हम इस लोक से दूर भगाते हैं। वह राजा, वरुण के पाश में जकड़ा रहे । हम उसकी तेजस्विता वर्चस्व, प्राण और आयुष्य को क्षीण करके उसे अधोगामी करते हुए धराशायी करते हैं ॥१६,८.२६॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ॥१६,८.२७॥

विजयश्री से अर्जित पदार्थ, शत्रुओं को छिन्न-भिन्न (विदीर्ण) करने से प्राप्त पदार्थ, सत्यनिष्ठा, तेजस्विता, सज्ञान (ब्रह्म, स्वर्गीय आनन्द (आत्मज्ञान), यज्ञीयसत्कर्म, गौ आदि पशु, प्रजारूप सन्तति और वीर सन्तानें हमारीगरिमा के अनुरूप हों ॥ अमुक गोत्र में उत्पन्न, अमुक की सन्तान को हम इस लोक से निष्कासित करते हैं ॥ वह मृत्युदेव के पाश बन्धन से न छूटे ॥ उसकी उस तेजस्विता, वर्चस्व (बल- सामर्थ्य) प्राणशक्ति और आयुष्य आदि का ह्रास करते हुए हम उसे अधोगाम करके गिराते हैं ॥१६,८.२७॥

॥अथर्ववेद – षोडशं काण्डम्॥

सूक्त ९- दुःखमोचन सूक्त

शत्रुओं का वध करके लाए हुए पदार्थ हमारे मृत्यु के पाश तथा प्रजापति देव की स्तुति

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमभ्यष्ठां विश्वाः पृतना अरातीः ॥१६,९.१॥

विजयश्री से उपलब्ध पदार्थ और छिन्न- भिन्न उपार्जित किए (हथिया) गये पदार्थ हमारे वर्चस्व को बढ़ाएँ, हम समस्त शत्र सैन्य शक्ति पर प्रतिष्ठित रहें ॥१६,९.१॥

तदग्निराह तदु सोम आह पूषा मा धात्सुकृतस्य लोके ॥१६,९.२॥

अग्निदेव और सोमदेव इसी आशय का अनुमोदन कर रहे हैं। पूषादेव हमें पुण्यलोक में अधिष्ठित (विराजमान) करें ॥१६,९.२॥

अगन्म स्वः स्वरगन्म सं सूर्यस्य ज्योतिषागन्म ॥१६,९.३॥

हम आत्मज्योति (स्वर्गलोक) को प्राप्त हों, हम अपनी तेजस्विता को प्राप्त करें। हम सूर्य की ज्योति से संयुक्त होकर भली प्रकार स्वर्गीय सुखों को प्राप्त करें ॥१६,९.३॥

वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो वसु वंसिषीय वसुमान् भूयासं वसु मयि धेहि ॥१६,९.४॥

ऐश्वर्य- सम्पदा की वृद्धि के लिए हमें धन- सम्पदा का स्वामी बनाएँ । हे देव ! ऐश्वर्य भी यज्ञ स्वरूप है, अत: आप हममें वैभव- सम्पदा स्थापित करें ॥१६,९.४॥

॥इति षोडशं काण्डम्॥